Dated 25/9/2020
Friday

B.A Part 1 (H) Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिटेंदू

न्याय दर्शन में उपमान की व्याख्या करें ?

उपमान का अर्थ समानता का अधिष्ठान है। जो ज्ञान उपमान या सादृश्य का आधार रखकर अर्जित किया जाता है, उस ज्ञान का कारण उपमान प्रमाण है। जो ज्ञानोपलब्धि होती है, उसको उपमिति कहते हैं। इसलिए बहुत से नवीन आचार्यों ने इसकी परिभाषा 'उपमितिकरणम् उपमानम्' की है। इसके आधार पर समानता के आधार पर अर्पित किए हुए ज्ञान के उत्कृष्टतम साधन को उपमान कहते हैं। यदि कोई गवय को नहीं जानता किन्तु कहीं किसी प्रसंग में सुनकर उसकी जिज्ञासा अवश्य रखता है तो किसी जंगल में रहने वाले से अथवा पुस्तक में वर्णन सुनकर यह स्थिर करता है कि जैसी गाय होती है वैसी ही गवय भी होती है। अनन्तर जंगल में जाकर गवय को सामने देखता है और उसमें गाय की समानताओं को प्रत्यक्ष करके 'यही गवय है' यह निश्चित करता है। यही उपमान या सादृश्य पर आश्रित ज्ञान उपमिति है। और इसका कारण (उत्कृष्टतम साधन) उपमान है। प्रत्यक्ष और अनुमान के बाद तीसरा प्रमाण उपमान ही है। परन्तु सांख्य शास्त्री जो केवल प्रत्यक्ष, अनुमान को ही मानते हैं उपमान को अनुमान के अन्तर्गत मानते हैं। परन्तु नैयायिक लोगों का कहना है कि सादृश्य के आधार पर संज्ञासंज्ञि संप्रत्यक्ष को व्याप्ति आदि के अभाव के कारण अनुमान नहीं माना जा सकता। इसलिए उपमान पृथक प्रमाण है। वस्तुतः इसका विषय पृथक है; अतः उसे पृथक प्रमाण मानना ही उचित है।

उपमान का विश्लेषण :- उपमिति ज्ञान के विश्लेषण करने पर उसमें चार चीजें पाई जाती हैं। (i) अतिदेश वाक्य - किसी विश्वसनीय व्यक्ति प्रामाणिक कथन को ही अतिदेश वाक्य कहते हैं जो वस्तु के संबंध में जानकारी देता है। (ii) सादृश्यधी - उस प्रकार की वस्तु के मिलने पर पूर्व ज्ञात वस्तु से उसका सादृश्य ज्ञान प्राप्त करना सादृश्यधी है। गाय से नीलगाय का सादृश्य अनुभूत करना। (iii) वाक्यार्थस्मृति - सादृश्य को देखकर विश्वसनीय व्यक्ति के कथन का स्मरण करना वाक्यार्थ स्मृति कहलाता है विश्वसनीय व्यक्ति के कथन का स्मरण करना कि नीलगाय की तरह का ही पशु होता है। (iv) उपमिति - उपर्युक्त सभी से उत्पन्न ज्ञान की प्रदत्त वस्तु ही अमुक नाम से पुकारा या जाना जाने वाला विषय है। इससे स्पष्ट है कि सादृश्य ज्ञान की उपमान की उत्पत्ति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है

—X—